14 सुभाष मानव : सुभाष महामानव

माखनलाल चतुर्वेदी

(जन्म : 1887 ई. : निधन : सन् 1968 ई.)

राष्ट्रीय भावधारा के ओजस्वी कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म बावई (होशंगाबाद) में हुआ था। उन्होंने केवल नार्मल तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। सागर विश्वविद्यालय से डी.लिट् की मानद् उपाधि मिली थी। वे 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से हिन्दी जगत् में सुपरिचित हैं।

'हिमतरंगिनी', 'हिमकिरीटिनी', 'माता', 'युगचरण', 'समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा', 'बिजली काजर आँज रही', 'मरण ज्वार', 'कृष्णाज्वार', 'कृष्णार्जुन-युद्ध', 'बनवासी', 'कला का अनुवाद', 'समय के पाँव', 'साहित्य देवता', 'अमीर इरादे : गरीब इरादे', 'चिंतक की लाचारी' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य संमेलन की अध्यक्षता की और उन्हें तुलादान प्राप्त हुआ तथा मध्यप्रदेश द्वारा राजकीय अभिनंदन किया गया। उन्हें भारत सरकार की साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'सुभाष मानव : सुभाष महामानव' चतुर्वेदी की सुभाष बाबू के प्रति श्रद्धांजलि है जिसमें सुभाष बाबू का चरित्र-विश्लेषण करते हुए उन्होंने उनके संघर्षमय जीवन के चित्र उभरे हैं।

जब तुम भारत से गये, लोग कहते थे, तुम बीमार हो घर से बाहर नहीं निकल सकते और तुम थे कि घर से क्या देश से भी बाहर चले गए। गरज यह कि रहस्य सोचा अरविन्द ने, रहस्य काव्य बनाकर लिखा रवीन्द्र ने और रहस्य अवतरित हुआ तुम्हारे रूप में।

तुम जब युद्ध से लौटे, लोगों ने सोचा, तुम अमरीका और इग्लैण्ड से घिर जाओगे; बन्दी होंगे; तुम पर मुकदमा चलेगा; दण्ड दिया जायेगा। हिरोहितो, हिटलर, पेताँ और तुम डबल मार्च में एक साथ थे। सर्वनाश में, मित्र राष्ट्रों की सूलियों पर, अलग-अलग तिथियों में भले होओ, किन्तु भाग्य, परिणाम, दण्ड और यात्रा, ये एक ही होंगे।

किन्तु फिर तुम्हारा विमान चला, अपने सिपाहियों से बिदा लेकर, किसी अज्ञात लोक को। लोगों ने कहा कि वह विमान गिर पड़ा, विमान टूट गया। तुम गिर गये, तुम अज्ञात लोक के यात्री अनन्त लोक के यात्रा-पथी हो गये। तुम्हारी मृत्यु पर कुछ के जी में काँटा चुभ गया; कुछ के जी से काँटा निकल गया; किन्तु तुम्हारी मौत पर देशवासियों ने विश्वास नहीं किया; वे सोचते रहे और सोचते रहते हैं कि 'किसी दिन, किसी देश में, किसी वेश में, तुम जरूर मिलोगे।' किन्तु तुम तो 'रहस्य' हो न, जीवन में, मरण में। तुम्हारा स्वभाव कैसे बदलेगा? एक बात सच है, भारत का भाग्य बने, भारत का भाग्य बिगड़े, तुम अब उस निर्माण के हिस्सेदार नहीं हो सकते।

तुम दुनिया से हटे या न हटे, विश्वगति के परदे से हट गये। कैसे कठोर निर्णय हो रहे हैं, आँसुओं को हँसते, मृत्यु को मुस्कराते और निर्माणों में भूकम्प आते जगत् देख रहा है।

तुम लोगों के मन पर हो, जीवन पर छाये हो, क्योंकि तुमने भारतीय जीवन को युद्ध के बीचो-बीच 'जीवित' किया है। तुम भारतीय विश्वासों पर हरिया रहे हो, क्योंकि स्वतंत्रता मिलने के दिन, वे तुम्हारे प्रयत्नों का मूल्य चुकाना चाहते थे; किन्तु तुम न थे, तुम पास न थे। 'रहस्य' पर भी क्या किसी का कहना होता है? तुम भारतीयों की कल्पनाओं पर छाये हुए हो। अब सहगल, ढ़िल्लन, अबुलरहमान, शाहनवाज़, शिन्दे के होते हुए भी यादें आकाश में तुम्हें खोजती हैं; पुकार की वाणी मानो कहीं से टकराकर लौट आती है; आँखों में कोई दीखता है; किन्तु बाँहे खींचकर उसे हृदय से नहीं लगा पातीं। 'श्रद्धा' सँजोने की नियति आज्ञा नहीं देती। वह तुम्हें सामने लाकर खड़ा नहीं कर देती है। श्राद्ध करने को भारतीय मन राजी नहीं होता। वह मानता है कि तुम जहाँ कहीं हो, हो अवश्य।

तुम 'रहस्य' हो गये। इस देश के सामन्त, वीर, योद्धा और बलिदानी प्राय: रहस्य होते आये हैं, वे अपमानों के अनन्त सामर्थ्य से अपनाते हैं और वरदानों के समय रहस्य हो जाते हैं।

तुम बलिपन्थी, तुम रक्त-क्रान्ति के होता, तुम सेनानी, तुम सिपहसालार! क्या सौन्दर्य था तुम्हारी बालमूर्ति में! तरुणाई की तो मानो।

'अनब्याही हुलसी फिरै; ब्याही मीड़ें हाथ'

की दशा थी, तलवार लेकर तबीयत पर आनेवालों की अथवा तलवार वालों की तबीयत पर बाग़ बाग़ होनेवालों की।

तुम्हारे आसपास, नहीं, तुम्हारे पास बेदाग़ बहादुरी मानो अनदेखा-सा अनहोना बनकर देखनेवालों को अचम्भे कें जादू-भरे उल्लास बाँटती रहती। और बंगाल, वह तो मानो, -

नैनाँ के बँगले में तुम्हें, सैनों से बुला लेंगे;
पलकों की चिक डाल, पिया को, पुतली पर सुला लेंगे।

...बिना कहे कहती रहती है। अपनी क़ीमत अमीरों से भी अधिक कूतनेवाला प्रेम, बोलता नहीं है न! बड़े महँगे मोलों की थी, तुम्हारी यह मनमोहनी मरण - न्योतती मस्ती!

बंगाल के लाड़ले तुम, अपने-आप क्रान्ति-पथ पर नहीं आये। तुम्हें खोजा था, प्रबुद्ध लोगों में देशबन्धुदास ने। प्यार करनेवाला और खोजनेवाला, मानो सब निहाल हो उठे, जब उन्होंने देखा, कष्ट सामने आने पर तुम अधिक कष्ट माँगते; और त्याग करने पर तुम और अधिक त्याग के लिए बेचैन हो उठते। तुम कष्ट को जोड़ते, त्याग को गुणित करते। रहस्य मानो तुम्हारा स्वरूप ही नहीं, स्वभाव भी था।

तुम्हारी जीवन-यात्राएँ सदा विचित्र रहीं। तुम चले थे 'आई. सी. एस.'का इम्तहान देने, अपने ही भाइयों को गुलाम मानकर, गुलाम बनाकर विदेशी हुकूमत करनेवालों की 'बदजात' में मिलने और पहुँच गए 'सी.आर.दास' के क्रान्तिवादियों में, जहाँ अपने ही भाइयों को जन-देवता मानकर उनकी पूजा की जाती; मानो रक्त का टिकट लेकर, देश-सेवा के अग्नि-पथ में स्वर्ग पहुँच गये। इसी तरह तुम प्रस्तुत थे देश-भक्तों के साथ किसी ब्रिटिश जेल में युद्धकाल बिताने के लिए; और पहुँच गये युद्ध के बीचो-बीच ब्रिटेन के शत्रुओं को मित्र बना, युद्ध की सेना के सिपहसालार और भारतीय स्वातंत्र्य के 'प्रथम वाइसरॉय' कहलाने। फिर मित्र राष्ट्रों के जीतने पर, अपने सिपाहियों से बिदा लेकर तुम चले थे, किसी सुरक्षित स्थान की ओर, जहाँ से तुम वज्र की शक्ति बनकर, भारतीय राष्ट्र के शत्रुओं को मज़ा चखा सको । और विमान टूटने से तुम पहुँच गये अनन्त के लोक में, जहाँ देवता तुम पर पुष्प-वर्षा करें। गरज यह कि जीवन के यात्रा-पथ में तुम्हें 'मनचीते' से बड़ा 'प्रभुचीता' मिलता रहा।

जीवन-पथ भी तुम्हारा संघर्षमय रहा। देशबन्धु देवलोकवासी हुए, तब बंगाल का नेतृत्व तुम्हें प्राप्त न था। देश - प्रिय सेनगुप्ता से संघर्ष हुआ। ऐसा संघर्ष जिसमें तुम्हें पछाड़ मिली।

कांग्रेस के अखिल भारतीय पथ में तुम्हारे सामने जवाहरलाल थे। क्रान्तिवादियों का दल, बंगाल का दल और भारी हलचल के बाद भी गाँधीजी और मोतीलालजी के सम्मिलित बल के सामने तुम छोटे पड़ गये। तुम्हें पुनः कलकत्ता कांग्रेस में (1928) ठोकर मिली।

जब तुम स्विजरलैण्ड की रोग-शय्या पर पड़े स्वतंत्रता का स्वप्न-चित्र बना रहे थे, तब तुमने देशवासियों को चेतावनी दी थी कि गाँधी के नेतृत्व से दूर हट जायें; किन्तु जब तुम लौटकर भारत आए, तब देशभक्त नरीमान, डॉक्टर खरे और न जाने कौन-कौन गांधी-विरोधी तुम्हें स्वयं नष्ट करने पड़े, और गांधी के आशीर्वादों से भरी हरिपुरा कांग्रेस के सभापतित्व की गादी - वह राष्ट्रपतित्व तुमने, स्वयं गांधी और वल्लभभाई और गांधीवादियों के हाथों ग्रहण किया! इसमें भी कौन हारा तुम या गांधी?

फिर डॉक्टर पट्टाभि से लोहा लेकर, गांधी को पीछे ठेलकर तुमने त्रिपुरा कांग्रेस की गद्दी जीती। कितनी कटुता, कितनी भर्त्सना, कितने इलज़ामों के बीच। एक-सौ तीन ज्वर में भी कोई इलजाम तुम पर नहीं लगा, किन्तु तुम्हारी जीती हुई गद्दी पर राज किसने किया? यहाँ भी तुम्हारे सामने कठोर संघर्ष था। तुम्हें हारना पड़ा। कलकत्ता तुमने कांग्रेस की गादी छोड़ दी।

वह भी एक दिन था। तुमने सोचा, तुमने ठाना, तुमने शुरू किया कि कांग्रेस जैसी एक समानान्तर बलशालिनी संस्था का निर्माण करोगे और मेल किया श्री फजलुलहक़ से, जो तुम्हारे बाद लीग के ज़हर से बंगाल को भूखा मारने और दंगों में भून डालने में ही सफल हुए।

किन्तु तुम, तुम गांधी के साथ जेल में बैठकर माला जपने को तैयार न थे। तुम युद्ध को प्रभु द्वारा प्राप्त स्वर्ण-सन्धि समझते थे; और भारतीय आज़ादी के लिए उसका उपयोग करने के लिए इतने निश्चिंत थे कि 'प्राण

जाये' तो भी तुम उस अवसर को छोड़ने के लिए तैयार न थे। ऐसे निश्चय के लोगों के भाग्य में फूलों की शय्या कभी नहीं रही होती। उनके गले में पड़े फूलों के हार, विश्व के सुगन्धायमान अस्तित्व की क्षणिकता के सिवा और क्या व्यक्त करते हैं?

तुमने अपनी दृढ़ता को, कभी भी अवसरवादिता की गन्दी चादर से नहीं ढाँका। बड़े तुम्हारी पूजा के पात्र थे। तुम्हारा पथ-भंग करने के हक़दार नहीं। तरुण तुम्हारी सेना के सिपाही थे; माता पर कुरबान करने की हवन-सामग्री! तुम्हारे प्यार, दुलार, रोमांस और चुम्बन में से कुरबानी के यज्ञधूप की सुगन्ध आती थी और सिर उतारने के रक्त-बिन्दु उनमें से चू उठते थे।

पुलिस का कितना पहरा था! कलकत्ते में उस समय स्कॉटलैण्ड-यार्ड के शिक्षा प्राप्त कितने पुलिस खिलाड़ी तुम्हारे दायें-बायें तुम पर निगरानी करते हुए। फिर, तुम बीमार; तुम्हें दाढ़ी उग आयी। और एकाएक तुम गायब!

हिटलर का तुम्हें भारत का प्रथम वाइसराय बनाना; महीनों कोई खबर न पाकर भारतीयों को तुम्हारी मृत्यु की दु:शंका, और एक दिन तुम्हारा सेगाँव रेडियो पर भारतीयों से बोलना; और वह आज़ाद हिन्द सेना, वह युद्ध, वह तैयारी मानों युग के महान् और मरण माँगते तूफान के हाथों तुमने अपने-आपको हँसते-हँसते सौंप दिया।

और एक ब्रिटिश-युद्ध को जन-युद्ध कहनेवाली देशघातकता देश में कहने लगी, 'वह जापान का एजेण्ट हो गया'। वह देशघातकता, जो खुद जापान के महान् पड़ोसी के हाथों रोटियों और नारों पर बिक चुकी थी, किन्तु तुम थे कि जमाने की छाती पर लिखे अपने सुनहले नाम को, अपने हाथों मसल कर मिटा देने के मूल्य तक पर, अपने को संकटों में फेंक चुके थे कि 'भारत तू आज़ाद हो जा!'

और आज! आज तो सब तुम्हारा गुण गाते हैं। तुम्हारे सिपाही भारतीय सेना में ले लिये गये हैं। तुम्हारा 'जय-हिन्द' का नारा भारतवर्ष और भारतीय सरकार का नारा हो गया है और स्वर्गीय शरत् बोस से स्वर्गीय सरदार-श्री गले मिले थे, और उन्हें भारतीय मन्त्रिमण्डल में जगह भी मिली थी। किन्तु तुम? भारतीय तरुणाई अपने में जब-जब बल खोलेगी, तो तुम्हें पुकार उठेगी!

एक भारतवासी, सिर्फ एक भारतवासी ने अपनी सब संपत्ति तुम्हारे नाम कर दी थी। वे थे सरदार पटेल के ज्येष्ठ भ्राता; श्री विट्ठलभाई पटेल।

इतनी शक्ति कौन अपने में संचय करेगा? यदि भारत को आज़ाद रहना है तो सुभाष की ताक़त अपने में रखनेवाला सिपाही, सिपहसालार सेनानी ही उसे आज़ाद रख सकता है।

और यदि आज सुभाष किसी ओर से आ जायँ? तो वह अपनी स्त्री और पुत्री के साथ महान् गर्व की वस्तु होगा, किन्तु वह पूजा पाएगा, प्रलय का चार्ज तो उसे किसी नवजवान ही को सौंपना होगा।

उसकी अनन्त असफलताएँ और मोद-भरी अगणित सफलताएँ भारत को संपूर्ण सफल बनाकर गौरवमयी हो गयी हैं। क्रियाशील, स्वप्नदर्शी, भक्त और साधक जब अपने संकल्पों पर समर्पित हो संघर्षों पर उतरता है, तब उस व्यक्ति की असफलताएँ समाज और समूह की सफलता बनकर, देशों के रक्त में लौटती हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

डबल मार्च शीघ्र अभियान **होता** यज्ञ में आहुति देनेवाला **बदजात** नीच **मनचीता** इच्छानुसार **प्रभुचीता** ईश्वरेच्छानुसार **भर्त्सना** कड़ी निंदा **बलशालिनी** शक्तिशाली **तरुणाई** युवावस्था, यौवन **सैन** इशारा, संकेत **हरियाना** हरा-भरा होना **चिक** बाँस की तीलियों से बना परदा, जिसे खिड़की-दरवाजों पर लटकाते हैं **बदजात** एक गाली, नीच **गादी** गद्दी **सिपहसालार** सेनापति, सेनाध्यक्ष, **कूतना** कीमत लगाना **गरज** मतलब **बलिपंथी** बलिदान के पंथ पर चलनेवाला **टल** विहवलता, बेचैनी **यज्ञधूप** यज्ञ में डाली जानेवाली हवन सामग्री **देशघातकता** देशद्रोही भावना **सेनानी** सेनानायक

मुहावरे

जी में काँटा चुभना खटकना **काँटा निकालना** संकट दूर होना **बाग-बाग होना** प्रसन्न होना **मजा चखाना** किए हुए अपराध का दंड देना **पछाड़ मिलना** पराजित होना **पीछे ठेलना** हराना **जी में काँटा चुभना** मन में पीड़ा उत्पन्न होना **जी से काँटा निकलना** राहत महसूस करना या होना **हाथ मींज़ना** पछताना, **लोहा लेना** मुकाबला

करना **कुरबान करना** किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए अपनी प्रिय वस्तु या व्यक्ति को मिटा देना, **बाग-बाग होना** बहुत प्रसन्त होना, **मजा चखाना** किए का फल देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) सुभाष बाबू का जीवन-पथ कैसा रहा?

(क) सुखमय (ख) संघर्षमय (ग) आनंदमय (घ) भावमय

(2) किस साल में सुभाष बाबू को कलकत्ता कांग्रेस में ठोकर मिली?

(क) 1918 (ख) 1928 (ग) 1914 (घ) 1938

(3) सुभाष बाबू ने किसको लोहा देकर त्रिपुरा कांग्रेस की गद्दी जीती?

(क) सरदार पटेल को (ख) गांधीजी को (ग) डॉ. पट्टाभि को (घ) जवाहरलाल नेहरु को

(4) सुभाष बाबू ने कौन-सा नारा दिया?

(क) जय गोपाल (ख) जय हिन्द

(ग) वंदे मातरम् (घ) जय जवान जय किसान

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) सुभाष बाबू अज्ञात लोक के यात्री में से किस लोक के यात्री हो गये?

(2) सुभाष बाबू किसकी कल्पनाओं पर खोए हुए थे?

(3) सुभाष बाबू किन क्रान्तिवादियों के दल में पहुँच गये थे?

(4) सुभाष बाबू का किससे संघर्ष हुआ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) सुभाष बाबू युद्ध को कौन-सी संधि समझते थे?

(2) सुभाष बाबू ने अपनी दृढ़ता को किस चादर से नहीं ढँका?

(3) इस देश में कौन-कौन रहस्य होते आये हैं?

(4) सुभाष बाबू के लिए रहस्य क्या था?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सुभाष बाबू की मृत्यु का समाचार सुनकर भारतवासियों के मन पर कैसा प्रभाव पड़ा?

(2) सुभाष बाबू ने कांग्रेस के सभापतित्व की गद्दी एवं राष्ट्रपतित्व का पद किसके हाथों से ग्रहण किया था?

(3) सुभाष बाबू ने सेगाँव रेडियो पर से भारतवासियों के लिए क्या संदेश दिया?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) भारत तू आज़ाद हो जा।

(2) तुम लोगों के मन पर हो, जीवन पर छाये हो, क्योंकि तुमने भारतीय जीवन को युद्ध के बीचो-बीच जीवित किया है।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः सुभाष बाबू की जीवनी प्राप्त कर पढ़ें।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः

- राष्ट्रीय भावना से प्रेरित किसी एक महामानव पर रेखाचित्र तैयार करवाइए।
- महात्मा गांधी, सरदार पटेल जैसे महामानव के रेखाचित्रों पर कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए।